IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

लखीमपुर जिले की सामाजिक आर्थिक विकास में कृषि का योगदान

विकास सिंह*

डॉ. पुष्पा सिंह**

*शोध छात्र (भूगोल), राजा हरपाल सिंह पी.जी.कॉलेज सिंगरामऊ, जौनपुर

**एसोसिएट प्रोफेसर (भूगोल विभाग), राजा हरपाल सिंह पी.जी.कॉलेज सिंगरामऊ, जौनपुर

भूगोल विज्ञान में द्विपक्षीय तत्वों के जिस तत्व का महत्व सर्वाधिक रूप से स्वीकार किया गया है वह मानव है। मानव के बिना भूगोल विज्ञान की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जनसंख्या परिवर्तन किसी भी क्षेत्र की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि को प्रभावित कर सकती है। वर्ष 2001 में जनपद की जनसंख्या 320737 थी जो वर्ष 2011 में बढ़कर 4013634 हो गयी। लखीमपुर जनपद की जनसंख्या वृद्धि उत्तरप्रदेश की जनसंख्या वृद्धि दर से अधिक पायी गयी। लखीमपुर जिले मे जनसंख्या घनत्व नगरों के आस–पास अधिक देखने को मिलता है। प्रत्येक विकासखण्ड स्तर पर जनसंख्या घनत्व तथा अति बाहुल्य जनसंख्या क्षेत्र जनसंख्या घनत्व का बोध कराती है।

भारत का अपितु विश्व का सर्वांगीण विकास शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव है, जो किसी भी क्षेत्र की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को सुधारने में मदद करती है। जनपद लखीमपुर में तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण आर्थिक विकास की गति धीमी पड़ती दिखाई देती है। इस गति को बढ़ाने में शिक्षा का प्रयोग करना नितांत आवश्यक है। ज्ञान के अभाव में मानव प्राकृतिक सम्पदाओं के उपभोग करने में उतना सक्षम नहीं हो पाता जितना शिक्षा प्राप्त करने के बाद।

जनपद लखीमपुर में प्राकृतिक असमानताएं तथा वर्षा की मात्रा भूमि की उर्वरता, प्राकृतिक आपदाओं के कारण जनसंख्या घनत्व में विभेद उत्पन्न करती हैं। यहां की सामाजिक–अर्थिक स्थिति को प्रभावित करने वाले तत्वों में यातायात, संचार, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं इतयादि महत्वपूर्ण कारक भी हैं।

जनपद लखीमपुर का विस्तार $27^{0}06'$ उत्तरी अक्षांश से $28^{0}61'$ उत्तरी अक्षांश तथा $80^{0}34'$ पूर्वी देशान्तर से $81^{0}30'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। उच्चावच के दृष्टि से देखा जाये तो जनपद शारदा नदी, उल्ल, काठिना, गोमती नदी के क्षेत्रों के अंतर्गत आता है। जनपद के पूर्व में बहराइच, पश्चिम में शाहजहापुर एवं पीलीभीत, उत्तर में नेपाल और दक्षिण में हरदोई जिला है। भारत के सर्वे जनरल के अनुसार क्षेत्र का भौगोलिक क्षेत्रफल 7680 वर्ग किमी. है। जनपद की लम्बाई लगभग उत्तर–पूरब में 1460 किमी., उत्तर–पश्चिम 144 किमी. तथा दक्षिण सीमा लगभग 132 किमी. की हैं। भौगोलिक दृष्टि से यह जिला दो भागों में विभाजित है–गांजर (तराई) एवं उपरहार। गांजर क्षेत्र शारदा नदी क उत्तर तथा घाघरा नदी के मध्य में स्थिति है, जबकि उपरहार क्षेत्र शारदा नदी के दक्षिण में स्थिति है।

जनपद में वनों की मात्रा अधिकाधिक है इन वनों में प्रायः टून, ढाक, सेमर, ईमली, नीलम तथा डोमशाल इत्यादि पाये जाते हैं। जो ग्रामीण क्षेत्र में 41898 हेक्टेयर तथा शहरी क्षेत्र में 123651 हेक्टेयर हैं। जनपद में ही भारत का प्रमुख राष्ट्रीय पार्क दुधवा नेशनल पार्क स्थिति है। जनपद में मुख्य रूप से शाल तथा शाखू वनस्पतियां भी पायी जाती हैं। इस प्रकार से जनपद में कुल वनों का क्षेत्रफल 165549 हेक्टेयर है।

भूमि उपयोग की दृष्टि से देखे तो पाया जाता है कि जनपद लखीमपुर में वन क्षेत्र 21.42 प्रतिशत, परती भूमि 2.75 प्रतिशत, चारागाह 0.12 प्रतिशत, उद्यान बाग वृक्ष एवं क्षाड़ियों का प्रतिशत 0.43 है। जनपद में सर्वाधिक 62.90 प्रतिशत भू–भाग में शुद्ध बोया गया है

जबकि 11.70 प्रतिशत भूमि कृषि कार्यके अतिरिक्त अन्य उपयोग में भी ली जाती है। इस प्रकार कह सकते हैं कि जनपद लखीमपुर के सामाजिक–आर्थिक विकास में कृषि का महत्वपूर्ण योगदान है। जनपद तराई क्षेत्र होने के कारण यहां की पूरी अर्थव्यवस्था कृषि पर ही केन्द्रित है। लखीमपुर जनपद में जो भी उद्योग विकसित हैं वह पूर्णतः कृषि पर आधारित है। जनपद लखीमपुर में कृषि आधारित उद्योग, खाद्यान्न आधारित उद्योग, तेल पेराई उद्योग, ईंट निर्माण उद्योग, हस्तकला आधारित कुटीर उद्योग, पशु–पालन, मिट्टी की वस्तुओं का निर्माण इत्यादि प्रकार के उद्योगों के साथ–साथ गन्ने के माध्यम से शक्कर (चिनी) उत्पादन का प्रमुख केन्द्र है।

लखीमपुर जनपद में एक बार से अधिक फसल बोने अर्थात् शस्य प्रतिरूप के माध्यम से कृषि कार्य मात्र गेहूं, जौ, चावल, मक्का, तिलहन–दलहन, गन्ना, सब्जी इत्यादि की ही बुआई की जाती है। सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं को इस ओर ध्यान आकृष्ट करना चाहिये ताकि लखीमपुर जनपद के आधी से अधिक आबादी जीवन निर्वाह कृषि के प्रयोग से बाहर आकर इस जिले की आर्थिक स्थिति का विस्तार कर सके।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि स्वतंत्रता के पश्चात् लखीमपुर जिले में बहुउद्देश्यीय कार्यक्रम भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित किये गये, लेकिन अशिक्षा के अभाव में यहाँ का जनसमुदाय इन योजनाओं का लाभ अपेक्षा के अनुरूप नहीं उठा सके। वर्तमान में योगी एवं मोदी सरकार ने ग्रामीण कृषकों के लिए अनेक योजनाएँ संचालित किये हैं। उन्नति कृषि हेतु ऋण, कृषि वस्तुओं, उपकरणों को भी उपलब्ध कराने का संकल्प लिया है। कृषि का विकास समुचित हो इसलिए संचार एवं आकाशवाणी के माध्यम से कृषि सहायता केन्द्र भी खोले गये हैं। कृषकों की प्रमुख समस्याओं में भूमि हस्तानान्तरण, वाह्य व्यक्तियों द्वारा शोषण, गरीबी, ऋण ग्रस्तता इत्यादि समस्याओं के निराकरण हेतु भी योजनाओं को लागू कर उन्हें सुलझाने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र की समस्याओं को दृष्टिगत करते हुए जिले की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को बदलने हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं। इसके अन्तर्गत ऋण सुविधा उपलब्ध कराना, परिवहन के साधनों का विकास, बाजारों में सुधार, स्वच्छ पेयजल आपूर्ति, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण सेवाएं उपलब्ध कराना, शिक्षा एवं साक्षरता में वृद्धि के साथ–साथ रूढ़िवादिता एवं कुप्रथाओं तथा अंधविश्वास को दूर करने की आवश्यकता है। साथ ही क्षेत्रीय एवं जिला स्तरीय स्तर पर लघु एवं कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देकर जिले की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में सुधार किया जा सकता है। इस प्रकार जिले में जो भी विकास के कार्यक्रम किये जाये वह परिस्थितिकीय विकास से युक्त स्थाई विकास की ओर हो जो ग्रामवासियों को स्वीकार हों। साथ ही विकास में उनके मूल रूप को बनाये रखना भी अत्यावश्यक है। अतः परिस्थितिकीय जन्य विकास ही इस क्षेत्र के लिए सर्वाधिक उपयुक्त हो सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ :

1. शर्मा, आर.सी. (1961), विलेज वनकटी, तहसील निघासन, डिस्ट्रिक्ट खीरी 'विलेज सर्वे मोनोग्राम।
2. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, लखीमपुर खीरी,
3. बुरार्ड, सिडनी (1916), दि ओरिजन ऑफ दि हिमालय, सर्वे ऑफ इण्डिया पब्लिकेशन।
4. बेलशॉ, डी.जी.आर. (1970) रूरल डेवलेपमेंट प्लानिंग कान्सेप्ट्स एण्ड टेक्टिनक्स, जर्नल ऑफ एग्रिल इकोनॉमिक्स, वाल्यूम–28, नं. –3।
5. शर्मा, बी.एल.(1987), कृषि भूगोल, साहित्य भवन आगरा,
6. सिंह, बी.एन. (2005), कृषि भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद
7. जे. सिंह, (1982), भौगोलिक चिंतन के मूल आधार